



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

ड्रग थेरेपी

के संस्करण 2016

4. कोर्टिकोस्टेरॉयड

4.1 वविरण

कोर्टिकोस्टेरॉयड वह रासायनिक पदार्थ (हार्मोन) है जो शरीर में बनता है। समान प्रकार के पदार्थ बाह्य रूप से भी बनाए जा सकता है तथा इनका उपयोग बाल गठिया संबंधी रोगों के इलाज में किया जाता है।

बच्चों को दिए जाने वाले स्टीरॉयड एथलीट द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्टीरॉयड से अलग होते हैं।

स्टीरॉयड जो की सूज पैदा करने वाली अवस्थाओं में उपयोग होते हैं उन्हें ग्लूकोकोर्टिकोइड्स कहते हैं। यह बहुत तेज काम करने वाली दवा है जो की प्रतिरक्षा तंत्र के काम में रुकावट डालती है और सूजन को कम करती है। अधिकतर इनका उपयोग बीमारी के जल्द नियंत्रण के लिए किया जाता है जब तक की अन्य दवाएं कोर्टिकोस्टेरॉयड के साथ मलिकर काम करना शुरू नहीं करती।

प्रतिरक्षा तथा सूजन को कम करने वाले प्रभाव के आलावा इन दवाओं के दूसरे प्रभाव भी हैं जैसे हृदय संबंधी तथा तनाव की प्रतिक्रिया, पानी शक्कर और वसा का शरीर में उपयोग तथा BP का नियंत्रण।

चिकित्सा संबंधी प्रभावों के आलावा इनके दुष्प्रभाव भी हैं जो लम्बे उपचार की वजह से होते हैं। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चा जिस डॉक्टर की देखरेख में है उन्हें बीमारी के इलाज और दवा के दुष्प्रभावों को कम करने का पूरा अनुभव होना चाहिए।

4.2 डोज / देने के तरीके

कोर्टिकोस्टेरॉयड दवाओं को मूँह से या नसों में इंजेक्शन से लिया जा सकता है अथवा जोड़ों में इंजेक्शन और ड्राप या चमड़ी पर लगाकर उपयोग किया जाता है।

डोज तथा देने का तरीका बीमारी और उसकी गंभीरता के आधार पर किया जाता है। अधिक डोज जब इंजेक्शन द्वारा दिया जाता है तो वह अधिक तीव्र और प्रभावी होता है।

खाने वाली दवाएँ अलग अलग मात्रा में उपलब्ध हैं। प्रेडनीसोन या प्रेडनिसोलोन सबसे अधिक उपयोग किए जाते हैं।

दवा के डोज तथा कतिनी बार देना चाहिए इसका कोई सामान्य नियम नहीं है।
सामान्यता: सुबह में अधिकतम २ मग्रा / की ग्रा प्रतिदिन (अधिकतम ६० मग्रा प्रतिदिन)
अथवा हर दूसरे दिन के डोज से कम से कम दुष्प्रभाव होते हैं लेकिन कभी कभी दिन में दो या
तन बार बांटकर दी गई डोज बीमारी के नियंत्रण में अधिक प्रभावी होती है। गंभीर बीमारी में
कई चिकित्सक अधिक डोज में मथाइल प्रेडनिसोलोन नसों में इंजेक्शन द्वारा देते हैं
(ज्यादातर दिन में एक बार कई दिनों तक ३० मग्रा / की ग्रा प्रतिदिन, अधिकतम १ ग्रा
प्रतिदिन)

कई बार प्रतिदिन छोटे डोज में नसों से इंजेक्शन दिए जाते हैं जब खाने वाली दवा लेने में कोई
समस्या होती है।

जुवेनाइल इडओपेथिक आर्थराइटिस, में सूजे हुए जोड़ों में लम्बे समय काम करने वाले
कोर्टिकोस्टेरॉयड के इंजेक्शन अच्छा प्रभावी इलाज है। ट्राइमसिनोलोन छोटे क्रिस्टल के
रूप में स्टीरॉयड है जो जोड़ों में इंजेक्शन देने के बाद अंदर फैल जाता है और धीरे धीरे लम्बे
समय तक दवा का प्रभाव रहता है।

दवा का असर कई मरीजों में कई महीनों तक रहता है। एक बार में एक या अधिक जोड़ों में एक
साथ इंजेक्शन दिए जा सकते हैं। इसके लिए दर्द कम करने वाले दवाएँ जैसे क्रीम या स्प्रे या
लोकल तथा जनरल एनेस्थीसिया दिया जाता है। जो जोड़ों की संख्या तथा रोगी की उम्र पर
नरिभर करता है।

4.3 बुरे प्रभाव

कोर्टिकोस्टेरॉयड से दो मुख्य प्रकार के दुष्प्रभाव होते हैं एक वह जो दवा के लंबे समय तक
उपयोग से है और दूसरे वह जो इलाज बंद करने की वजह से होते हैं। यदि इन दवाओं को
लगातार एक सप्ताह लिया जाए तो अचानक बंद नहीं किया जा सकता है क्योंकि उसके गंभीर
बुरे प्रभाव हो सकते हैं। यह प्रभाव बाहर से दिए जाने वाले स्टीरॉयड की वजह से शरीर में
अपने आप बनने वाले स्टीरॉयड के कम होने के कारण होता है।

दुष्प्रभाव सामान्यतः डोज पर नरिभर होते हैं जैसे समान टोटल डोज कई भागों में देने से बुरे
प्रभाव दवा को रोज एक भाग में देने की तुलना में अधिक होते हैं। इनमें मुख्य है अधिक भूख
लगना वजन बढ़ना तथा त्वचा में स्ट्रेच मार्क। इसलिए वजन को नियंत्रण में रखने के लिए
संतुलित भोजन करना चाहिए जिसमें वसा तथा शर्करा की मात्रा कम और फाइबर अधिक
होना चाहिए। चेहरे पर मुँहासों को त्वचा पर लगाने वाली दवाओं से ठीक किया जा सकता है।
नींद की समस्या, मूड में बदलाव और शरीर में कम्पन महसूस होना भी आम है। लम्बे समय
तक इन दवाओं के उपयोग से शारीरिक विकास ठीक तरह से नहीं हो पाता है। इस महत्त्वपूर्ण
दुष्प्रभाव को रोकने के लिए दवा को कम से कम डोज व कम से कम समय के लिए देना चाहिए।
०.२ मग्रा / की ग्रा / प्रतिदिन (अथवा अधिकतम १० मग्रा रोज) के डोज से शारीरिक
विकास की समस्या कम होती है।

रोगों से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है जिससे बार बार या गंभीर इन्फेक्शन हो सकते हैं
जो की प्रतिरोधकता के कम होने की सीमा पर नरिभर करता है। इन बच्चों में चिकन पॉक्स
गंभीर हो सकता है इसलिए लक्षण आते ही या किसी चिकन पॉक्स रोगी के संपर्क में आते ही
डॉक्टर से सलाह लेना चाहिए।

हर एक स्थिति के आधार पर चकिनपॉक्स के वरिद्ध एंटीबॉडी इंजेक्शन या एंटीवायरल एंटीबायोटिक दिए जा सकते हैं।

कई छुपे हुए दुष्प्रभाव नियमित जाँच पर देखे जा सकते हैं। उनमें से एक और ऑस्टियोपोरोसिस है, जिसमें हड्डियों से कैल्शियम का क्षय हो जाता है जिसके कारण हड्डिया कमजोर हो जाती हैं और फेक्चर होने की संभावना बढ़ जाती है। ऑस्टियोपोरोसिस की जाँच बोन डेन्सिटोमेट्री से की जाती है। विटामिन D और कैल्शियम की पर्याप्त डोज देने पर (१००० मग्रा प्रतिदिन) इसे बढ़ने से रोका जा सकता है।

आँखों संबंधी बुरे प्रभाव मोतियाबिंदु तथा ग्लूकोमा हैं। यदि ब्लडप्रेशर अधिक बढ़ता है तो नमक कम लेने का सलाह दी जाती है। खून में ग्लूकोज भी बढ़ सकता है जिससे स्टीरॉयड संबंधी डायबटीज होती है तथा खाने में वसा और शर्करा कम लेना उपयोगी होता है।

जोड़ों में स्टीरॉयड इंजेक्शन के कोई खास दुष्प्रभाव नहीं देखे गए हैं। इंजेक्शन देते समय दवा के बाहर निकल जाने का खतरा होता है जिससे उस भाग की त्वचा का क्षय तथा कैल्सिनोसिस हो सकता है। स्टीरॉयड इंजेक्शन से इन्फेक्शन का खतरा काफी कम होता है (लगभग १०,००० में एक)

4.4 मुख्य बाल गठिया रोग संबंधी उपयोग

कोर्टिकोस्टेरोइड को लगभग सभी गांठिया संबंधी बमारियों में उपयोग किया जा सकता है समान्यता: कम से कम डोज और समय के लिए उपयोग होना चाहिए।

"><http://labels.fda.gov> <http://labels.fda.gov>